GALAXY INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (GIIRJ)
ISSN (E): 2347-6915
Vol. 9, Issue 5, May (2021)

CASTE AND GENDER IN INDIAN SOCIETY

Dr. Anirudh Kumar Sudhanshu,
Motilal Nehru College, Hindi Department, University of Delhi, Delhi

ABSTRACT

Gender, caste, etc. have existed in Indian society for years. If we define it as Mills, then these categories provide an analytical framework at a special level to understand the complexities inherent in Indian social phenomena. It is clear from the gender perspective that it is not found in civilizations, that contrary to social structure, it is generated by the interrelationships between the sexes. This It is found equally in every society. Social, political, cultural, economic development is dependent on it, hence, caste, gender in society determine the social characteristic and its form in all human civilizations. Developing comprehensive understanding in the context of society. Demand has been created. Analysis of these relationships is incomplete without thorough study.

भारतीय समाज में जाति और लैंगिकता

डॉ अनिरुद्ध कुमार सुधांशु,
मोतीलाल नेहरु कॉलेज, हिंदी विभाग ,दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली

सार

भारतीय समाज में लिंग,जाति आदि का अस्तित्व वर्षों से है यदि हम इसे मिल्स के रूप में परिभाषित करके देखे तो यह श्रेणियों भारतीय सामाजिक घटनाओ में निहित जटिलताओ को समझने के विशेष स्तर पर विश्लेषणात्मक ढांचा प्रस्तुत करती है ।ऐसी शक्तिशाली सामाजिक श्रेणी विश्व की अन्य सभ्यताओ में नहीं मिलती लिंगात्मक परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि समाजिक संरचना के विपरीत लिंगो के बीच अंत: सम्बन्धो से उद्भभूत होती है । यह प्रत्येक समाज में सामान रूप से पाया जाता है ।जिस सामाजिक ,राजनीतिक,सांस्कृतिक,आर्थिक विकास निर्भर होते है अतः समाज में जाति,लिँग सभी मानव सभ्यताओ में सामाजिक विशेषता एवं उसके रूप को निर्धारित करना समाज के सन्दर्भो में व्यापक समझ विकिसित करना समय की मांग बन चुकी है ।इन सम्बन्धो का विश्लेषण गहन अध्यन के बिना अधूरा है ।वस्तुतः समाज में निहित विभिन्न संघटकों को जटिल सच्चाई के विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में समाज जाति,लिंग परस्पर एक दूसरे से इस तरह से अन्तः संबंधित और अन्तः क्रिया करते हुए पाते है कि या तो वे एक दूसरे की कार्यप्रणाली को वाधित करती है या उसे गत्यात्मकता प्रदान करती है ।उदाहरणार्थ भारतीय समाज के अंतर्गत जाति एवं लिंग के तत्व इस तरह से अन्तःसम्बन्धित है यदि हम महिलाओ की वास्तविकता स्थिति को देखे तो जाति संघटन के अध्ययन के बिना यह संभव नही है वस्तुतः जाति भारतीय सामाजिक संरचना का वह तत्व है जो भारत की सामाजिक व्यवस्था के हर पहलू को गंभीर रूप से प्रभावित करता है ।इसमें हम जाति लिँग से जुड़े सामाजिक श्रेणियों के व्यापक विश्लेषण का प्रत्यन करंगे।

भारत में सामाजिक संघठन का मूलाधार जाति ही है ।जाति-व्यवस्था सामाजिक,राजनीतिक आर्थिक व् सांस्कृतिक पहलुओं के साथ एक अनूठी संस्था के रूप में उभरी है ।इसने सामाजिक जीवन को समग्र रूप से प्रभावित किया है। प्राचीन वर्णव्यवस्था से उदभुत जाति व्यवस्था ने भारत में कई तरह से सामाजिक बुराइयो को उत्पन्न किया है ।भारत में अनेको सदियो से समाज कई जातियो व् अजातियो में विभाजित रहा है ।ऊँची जातियो द्वारा निम्न जातियो का शोषण किया जाता था कुछ निम्न वर्ग की जातियो को दलित माना जाता है दलित होना उनके लिए अभिशाप बन गया था ।इस प्रकार भारतीय सामाज में उच्च जातियो द्वारा निम्न जातियो के शोषण के रूप में परिलक्षित होता है । जाति की परिभाषा विभन्न लोगो ने भिन्न- भिन्न संदर्भो में की है ।उदहरणार्थ "एंथनी गिडेंस जाति को सामाजिक स्तरीकरण से संबंधित करते हुए इसे स्तरीकरण के ऐसे रूप

में परिभाषित किया है ।जिसमे व्यक्ति की सामाजिक स्थिती जन्म से निर्धारित होती है इससे वस्तुतः जाति समूहों के बीच अंर्तजातीय विवाह की कोई गुंजाइश नही होती ।जात की यह परिभाषा उसके समग्र उत्तर ओपनिवेशिक समाज में जाति एक महत्वपुर्ण भूमिका अदा करती है। जाति न प्राचीन भारत का कोई अपर्वर्तनीय तत्व है न भारतीय परम्परा और न ही किसी एक सभ्यता के मूल्य को प्रतिबिंबित करती है ।वस्तुतः यह एक आधुनिक परिघटना है जो भारत एंव औपनिवेशिक शासन के टकराव का एक विलक्षण परिणाम है जाति -व्यवस्था का भयंकर प्रभाव शोषित एवम् दलित बर्ग पर रहा है ।एक विशिष्ट प्रकार की जाति में जन्म लेने के कारण उन्हें दलित मन गया ।यह मानवता के पार्टी एक भीषण अपराध माना जाता है ।जमादार,भंगी,सफाई इत्यादि कार्य करने वालो को दलित माना जाता है ।जिनका उच्च वर्ग से स्पर्श भी अपराध है ।भारतीय समाज में दलितों की जिंदगी एक कलिंकत जीवन है ।माहिलाओ की स्थिती को जाति व्यवस्था ने अधिक प्रभावित किया है। उच्च जातियो की महिलाओ को कई प्रकार की निषिद्ध से मुक्त रखा जाता है ।इसलिए दलित महिलाये इस सन्दर्भ में ज्यादा स्वतन्त्र है ।इन प्रतिबंध के कारण उच्च जाति की महिलाये पुरुषो की अधीनता में जीने लगती है ।यह घर की चार दीवारो में कैद हो जाती है ।जब कि दलित महिलाये कमाने के लिए बहार निकलती है ।यह उच्च जाती की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र अनुवभ करती है।दलित महिलाओ को आजीविका तलाशने व् कम करने की पूरी तरह से छूट होती है ।यह माहिला सशक्तिकरण का तत्व नही है।बच्चों के पालन पोषण के लिए ऐसा करना पड़ता है ।इस प्रकार देखा जाये तो जाति - व्यवस्था ने उच्च जाति के वर्चस्व को बनाये रखा है।

लिंग - यह एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय रचना है।जिसका सामजिक एवम् सास्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है और जो विश्व की आधी जनसंख्या की बात करती है ।पुरुष प्रधान पित्रात्मक समाज यह वह उपकरण है ।जिसके माध्यम से नारीवादी विचारक सदियो से व्यापत महिला शोषण व् उत्पीड़न का रहस्योद्धटन करती है ।लिंग की धारणा प्रयोग विश्लेषणात्म रूप में किया जाता है । इस तरह यदि जेंडर एक समाजशास्त्रीय रचना है तो सेक्स एक जैव वैज्ञानिक रचना। "साइमन डी० वूवियर ने ठीक कहा है कि कोई माहिला के रूप में पैदा नहीं होता उसे महिला बना दिया जाता है "जेंडर का अर्थ सिर्फ शारीरिक लक्षण नही जिसको आधार बना कर स्त्री व् पुरुष में भेद किया जाये इसका अर्थ सामाजिक रूप से निर्मित होने वाले पुरुष व् स्त्री से है। जेंडर व् सेक्स में अंतर है ।सेक्स को शारीरिक एंव शरीर वैज्ञानिक से प्रभावित किया जाता है ।दूसरा जेंडर का निहतार्थ पुरुषत्त्व व् स्त्रीतत्व की मनोवैज्ञानिक,सामाजिक और सांस्कृतिक अंतर से है।" गिडेन्स ने कहा है कि जेंडर ने पुरुषत्व और स्त्रीतत्व के सामाजिक रूप में रचित धारणा से जुड़ा हुआ है ।यह आवश्यक रूप से जैव वैज्ञानिक सेक्स का परिणाम है ।समाज ने महिलाओ की स्थिति को सदैव पुरुषो की अधीनता की स्थिति में रखा है ।इसी कारण पुरुष व् स्त्री के बीच में दुरिया हुई वह मुख्यतः सामाजिक सांस्कृतिक ततबो का नतीजा है ।लिंग की संकल्पना वैचारिक रूप से इतनी सशक्त है कि इसने कई प्रकार के आंदोलनों एवम् सिद्धान्तों को जन्म दिया है ।माहिला आंदोलन व् समाज में नारीवाद दृष्टिकोण का विकास इसी का एक परिणाम है । माहिला आन्दोलन की बात करे तो सामाजिक जीवन व् उनकी स्थिति उन्नत करने के लिए यह लगातार प्रत्यनशील रहा है जिसमे अभी तक इसे आंशिक सफलता मिली ।स्वतंत्रत्ता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत में शासन एवम् राजनीति ने लैंगिक परिप्रेक्ष्य पर विशेष ध्यान नही दिया फिर भी स्वतंत्रयोत्तर काल में जीवन के विभिन्न क्षेत्रो महिला के हितो को संरक्षित एवम् सम्बंधित करने वाले संवैधानिक प्रावधानों की उपस्थिति से देश में लोकतान्त्रिक एवम् चुनावी राजनीति की गत्यात्मकता बढ़ी।जिसका एक निश्चय परिणाम यह हुआ कि भारतीय राजनीति के अंतर्गत लैंगिक परिप्रेक्ष्य पुनः चिंतन एवम् मनन किया जाने लगा ।सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक सांस्कृतिक जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओ पर पुरुष के प्रभुत्व के सपष्टिकरण से माहिलाओ के सशक्तिकरण की ओर लोगों का ध्यान गया ।कई प्रकार के सामाजिक ,आर्थिक ,राजनीति आंदोलन चाहे पर्यावरण संबंधी हो या सूचना सम्बन्धी महिलाओ की इनमे पूर्ण भागीदारी ने ये साबित कर दिया की आने वाले समय में उनके हितो की उपेक्षा संभव नहीं है.महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के बावजूद अभी कई सवाल जुड़े हैं की क्या महिलाएं केवल उद्योग मात्र है या उनकी कोई जैविक स्थिति है,यह सवाल आज भी एक प्रश्न,क्यूंकि जिस तरह से समाज में महिलाओ के प्रति हिंसा बढी है वो कोई खास उन्नति की ओर इशारा नहीं करती हैं बल्कि एक बढ़ते विभेद की और इशारा करती हैं,यह फिर अधिशेष की लड़ाई से जुड़ जाता है.जब जब समाज में अधिशेष की लड़ाई लड़ी जायेगी तो समाज का सबसे कमजोर तबका उसका केंद्र बनेगा पुरुषो की संख्या दुनिया भर में अधिक है उसका समाज के ज्यादातर साधनों पर कब्ज़ा है खेल संस्थानों पर कब्ज़ा है, राजनैतिक सन्स्थाओ पर कब्ज़ा है ऐसे में यह स्त्री जब इन संस्थाओं में अपनी प्रतिस्पर्धा दिखाती है तो पुरुष उसको दबा देता है.इसका उदाहरण मुक्केबाज़ मेरी कोम से समझा जा

सकता है कि विश्व भर में मुक्केवाजी में हिन्दुस्तान का कोई नाम नहीं और पुरुष बॉक्सर नहीं इसलिए हिन् केवल मेरी कौम के खेल को भारत में जगह मिलती है.अगर इन वर्गो में या फिर भारत में कोई बड़ा पुरुष बॉक्सर होता तो शायद मेरी कौम का नाम नहीं होता.इसको और स्पष्ट तौर पर देखें तो आपको भारतीय महिला क्रिकेट टीम के उधाहरण से समझा सकती हूँ कि किस तरह आप आज सभी भारतीय पुरुष क्रिकेटर का नाम जानते हों पर जब बात महिला क्रिकेट टीम की बात करें तो उनका नाम नहीं जानते हैं क्यूँ कारण स्पष्ट है कि वोहां पुरुष अधिपत्य है.जिन जगहों पर पुरुष खुद को थोड़ा श्रेष्ठ समझता है उस जगह स्त्री को दबा देता है.और जहाँ नहीं समझता उसको अपने नाक का प्रश्न बना देता है या उसको अपनी नाक मान उसका श्रेय भी अपनी झोली में दाल लेता है.ऐसे में चित और पट दोनों हिन् अपनी झोली में डालकर वो निश्चिन्त हो जाता है और खुद को उसका संरक्षक मान कर उसको अपने से नीचे मानता है.

निष्कर्ष यह कहा जा सकता है कि भारत जैसे देश की सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक सांस्कृतिक प्रणाली के समग्र अध्यन व् विश्लेषण को तभी विकसित किया जा सकता है जब जाति ,लिंग जैसी सामाजिक संगठन की विभिन्न श्रेणियों को अच्छी तरह समझ जाये ।उदहरणार्थ यदि कोई अध्येता भरतीय समाज एवम् राजनीती पर जाती के बहुयामी प्रभाव के अध्ययन के उपेक्षा करता है तो भारतीय समाज की जटिलता और विवधताओं को वास्तविकता को समझना उसके लिए कठिन होगा।यदि वह इसका यथार्थ परक अध्यन भी करना चाहता है तो उसे बिभिन्न सामाजिक श्रेणियों के परस्पर अन्तः सम्बन्धो एवम् अन्तःक्रियाओ को जरुरी तौर पर देखना होगा ।तभी सामाजिक अनुसंधान का औचित्य सार्थक हो जायेगा.

सन्दर्भ

1) चार्ल्स राइट मिल्स-1970
2) एंथनी गिडेन्स,साइकोलॉजी ,चौथा अंक 2004
3) निकोल्स ड्रिर्क्स ,कोस्ट ऑफ़ माइंड-20014-एम्० एन० श्रीनिवास कॉस्ट इन मॉर्डर्न इण्डिया-1962
4) साइमन द बुआ-द सेकंड सेक्स 1949
5) विदयुत चक्रवर्ती और राजेन्द्र कुमार
6) इंडिया टुडे महिला विशेषांक
7) स्त्रीकल पुराना अंक ९-स्त्री लेखन स्वप्न और संकल्प -रोहिणी अग्रवाल